

किसी भी वस्तु या व्यक्ति में सुख की कल्पना से उससे लगाव या प्यार हो जाता है इस सुख को प्रतिरोध करने वाले से द्वेष या शत्रुता हो जाती है। जितना अधिक सुख उतनी अधिक दोस्ती और जितना अधिक प्रतिरोध उतनी अधिक दुश्मनी होती है।

आइए हम दूसरों के साथ दोस्ती कैसे विकसित होती है इस पर विचार करते हैं। यह सुनिश्चित है कि यदि आप किसी भी व्यक्ति से कुछ खुशी प्राप्त कर सकते हैं, तो आप उस व्यक्ति के साथ दोस्ती विकसित करते हैं। खैर, खुशी कल्पना या अवधारणा पर निर्भर करती है। इसलिए, एक दिलचस्प खोज यह है कि आप उन लोगों के साथ दोस्ती विकसित करते हैं जब आप की और उनकी खुशी की अवधारणा समान वस्तुओं में होती है।

www.shreeradha.com

shreeradha.eschool@gmail.com

WhatsApp +91 9423209132

आप दो वर्गों में दोस्ती को अलग कर सकते हैं। एक तत्काल दोस्ती है और दूसरी कुल अवधि की दोस्ती है। तत्काल दोस्ती उन क्षणों की दोस्ती है जब वह व्यक्ति आपके अनुसार चलता है, आपकी बात मानता है। कुल दोस्ती एक व्यक्ति की उपयोगिता की तर्कसंगत सोच से ली जाती है, जो जीवनभर रह सकती है। तत्काल मित्रता एक विशेष क्षण में समाप्त होती है जब दो व्यक्तियों की सोच की पंक्तियाँ मेल नहीं खाती। आप ऐसे क्षणों में वो व्यक्ति आपके मन नहीं भाता एवं आप उसके दोस्ती का आनंद नहीं ले सकते। झगडा हो जाता है। मारपीट की नौबत आती है। बोलचाल बंद होती है। हो सकता है गुस्सा नियंत्रण में न रखने की वजह से न केवल दोस्ती समाप्त होती है, बल्कि आप उस विशेष रूप से अपने दोस्त के लिए शत्रुता विकसित कर सकते हैं, यदि उसके कार्य ऐसे हैं कि वे आपके हितों के विपरीत हैं। मतलब यह है कि, उस पल में आप अपने दोस्त को पसंद नहीं करते क्योंकि वह आपके अनुकूल नहीं रहता है। इस प्रकार, तत्काल दोस्ती उन क्षणों में समाप्त हो जाती है हालांकि समग्र दोस्ती जारी रख सकती है। यही हाल रिश्तों का भी है।

पती-पत्नी, माँ-बेटा या बेटा, बाप-बेटा, भाई- भाई, बहन-भाई इत्यादि सब नातो में कभी ना कभी खरोच आती रहती है। झगडे होते रहते है। तलाक वगैरहा भी हो सकते है। इसलिए मैत्री का ये परिग्यान आवश्यक है।